पाठ 3

सावन आगे

4FCQTB

बरसा के चार महीना म बारो महीना के हाँसी–खुशी ह लुकाय हे। एकरे सेती चउमास के महत्तम जादा हे। चउमास के चार महीना म सावन ह सबले सुग्घर महीना होथे। कविता म सावन के चार ठन दृश्य हे।

बादर ऊपर बादर छागे।
चल भइया, अब सावन आगे।।

अब तरसे–मन हा नइ तरसे,
रिमझिम–रिमझिम पानी बरसे,
अइसे लगथे अब किसान ला,
जइसे दाई थारी परसे।
सब किसान के सुसी बुतागे।

अलकरहा बिजली जब बरथे,
घुडुर –घुडुर तब बादर करथे,
बछरू दँउड़े पुँछी टाँगके,
मनखे ऊपर ठाड़ अभरथे,
इंदर ह जस गोली दागे।

दँउड़े लागिन माढ़े नरवा,
चूहय लागिन छानी–परवा,
कती–कती के काम ल देखे,
हवय जे मनखे ह एकसरुवा,
पल्ला मार के ढोंड़गी भागे।

बादर आँसो नइ हे लबरा,
भरगे भइया खँचवा– डबरा,
देखव डोली भरे लबालब,
भुइँया ह हरियागे जबरा,
नवा–नेवरनिन दुलहिन लागे।

बादर ऊपर बादर छागे।
चल भइया, अब सावन आगे।।

शिक्षण–संकेत : ए पाठ ल पढ़ाऐ के पहिली गुरुजी लइका मन ल चउमास के बारे म थोरकुन जानकारी देवँय। गुरुजी बरसा ऋतु के बारे म कोनो छत्तीसगढ़ी गीत कक्षा म गावँय। एकर तियारी घरे म कर लेवँय। कोनो छत्तीसगढ़ी कविता ल राग लगाके पढ़ के सुनावँय। तहाँ ले पाठ के कविता ल घलो सुर–सुराँवट ले पढ़के बतावँय। लइका मन ल घलो राग लगाके पढ़े बर प्रेरित करँय। अइसन करे ले लइका मन ल मजा आही अउ कविता झटकुन याद हो जाही।

कठिन शब्दों के हिंदी अर्थ

ठाड़ – सीधे, अभरथे – टकराता है, माढ़े – स्थिर/रखा हुआ, नरवां – नाला, आँसो – इस वर्ष, खँचवा – छोटा गड्ढा, डबरा – बड़ा गड्ढा, डोली – खेत, सुग्घर – सुन्दर, एकसरूवा – अकेला।

प्रश्न अउ अभ्यास

कविता ल पढ़ाय के पाछू गुरुजी ह लइका मन ले कुछु मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। लइका मन ल दू दल म बाँट के उहू मन ल कहयँ के उहू मन एक–दूसर ले प्रश्न करँय। प्रश्न मन ह अइसन हो सकत हें–

क. सावन के आगू–पाछू कोन–कोन महीना होथे ?

ख. सावन कोन ऋतु म आथे ?

ग. ये कविता कोन भाषा म लिखे गे हवय ?

घ. सावन म कोन–कोन तिहार मनाय जाथे ?

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. पानी के बरसना ल देख के किसान ल कइसे लगथे ?

ख. बादर म बिजली कइसे चमकथे ?

ग. बिजली चमके के पाछू बादर म कइसे अवाज होथे ?

घ. बादर के गरजना ह कवि ल कइसे लगथे ?

ङ. बछरू ह मनखे ऊपर काबर अभरथे ?

च. सावन आथे त माढ़े नरवा का करथे ?

छ. भुइँया हरिया जाथे त काकर सही दिखथे ?

ज "आँसो बादर नइ हे लबरा" – काबर केहे गे हवय ?

प्रश्न 2 खाल्हे लिखाय कविता के अर्थ लिखव–

क अलकरहा बिजली जब बरथे ,
घुडुर –घुडुर तब बादर करथे ,
बछरू दँउड़े पुछी टाँगके,
मनखे ऊपर ठाड़ अभरथे ,

ख बादर आँसो नइ हे लबरा ,
भरगे भइया खँचवा– डबरा ,
देखव डोली लगे लबालब ,
भुइँया ह हरियागे जबरा ,

प्रश्न 3 कविता ल पूरा करव–

क "अब तरसे मन ह.....
.....
.....
..... परसे।"

ख "दँउड़े लागिन .....
.....
.....
..... ढोंड़गी भागे।"

भाषा–तत्व अउ व्याकरण

गुरुजी कविता म आय छत्तीसगढ़ी के कठिन शब्द के अर्थ लइका मन ल हिंदी म बताँय। फेर उही शब्द के अर्थ ल लइका मन एक–दूसर ले पूछँय। गुरुजी छत्तीसगढ़ी के कठिन शब्द ल बोलके लइका मन ल तख्ता म लिखे बर कहँय। एक लइका के गलती ल दूसर लइका ले सुधरवाँय।

प्रश्न 1 इहाँ तीन जोड़ी शब्द दे गे हे–

रिमझिम – रिमझिम, घुडुर–घुडुर, कती–कती। अइसनेच जोड़ी वाला पाँच शब्द सोचके लिखव।

प्रश्न 2 क. छत्तीसगढ़ी शब्द के हिंदी शब्द लिखव–

सुसी, अलकरहा, कती, एकसरुवा, लबरा।

ख. उल्टा अर्थ वाले छत्तीसगढ़ी शब्द लिखव –

नवा, हरियागे, बुतागे, लबरा।

ग. "पल्ला मार के भागना" – के का अर्थ निकलथे ?

रचना

क. बरसा ऋतु के बारे म अइसन पाँच लाइन लिखव, जउन बात ह ये कविता म नइ आय हे।

ख. कविता के लाइन अपन मन से जोड़ो –

- बरसे बादर रदरद–रदरद ।
  .....।
- भरगे भइया डोली–डाँगर।
  ..... ।

योग्यता विस्तार

- खेती–किसानी के बुता करत–करत ददरिया लोक–गीत गाये जाथे। कुछ अइसे ददरिया गीत सुरता करव जेमा खेती–खार अउ पानी–बादर के गोठ होवय।
- खेती–किसानी के बुता ह एकसरुवा मनखे के नोहे, काबर ? अपन घर म पूछ के लिखव।
- बरसा ऋतु के बारे म दूसर कवि मन के कविता सुरता करके लइका मन कक्षा म सुनावँय।

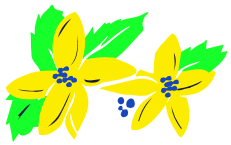

4FLLUY